मधुबन ओम् शान्ति अंक 318 जनवरी 2019

पत्र-पुष्प

HAPPY NEW YEAR 2019

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(11-12-18)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अन्तर्मुखता की गुफा में बैठ तपस्वी मूर्त बन सर्व को सुख और शान्ति की सकाश देने वाली, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष की, नव युग की, नवीनता सम्पन्न जीवन की सबको बहुत-बहुत बधाई हो।

नये वर्ष के जनवरी मास में हम सभी ब्रह्मा बाप के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए विशेष अन्तर्मुखी बन योग तपस्या करते हैं। वैसे यह नया वर्ष 2019 मीठे बाबा के अव्यक्त पार्ट का गोल्डन जुबिली वर्ष है। मीठे ब्रह्मा बाबा 1969 में अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त कर, शिवबाबा के साथ कम्बाइन्ड बनें और आज तक अव्यक्त वतन से हम सब बच्चों की पालना कर रहे हैं। बाबा के इस अव्यक्त पार्ट पर नज़र डालते हैं तो दिल से निकलता वाह मीठा बाबा वाह! आपने अव्यक्त होकर भी हम सबका कितना श्रृंगार किया है। देश विदेश में चारों ओर कैसे आपकी सूक्ष्म सकाश से सेवाओं में वृद्धि हुई है, सभी आपकी छत्रछाया में पलते आगे बढ़ते रहते हैं। आपने किसी को यह महसूस नहीं होने दिया कि साकार में बाबा नहीं हैं। हर एक के दिल से यही निकलता कमाल है मीठे बाबा आपकी जो हमारी मीठी गुल्जार दादी का रथ लेकर आपने कैसे सभी को साकार भासना दी, कितने गुह्य रहस्यों से भरे हुए अनमोल अव्यक्त महावाक्यों से सबको भरपूर किया। आपका एक-एक महावाक्य सभी में एक नया उमंग-उत्साह भर देता है। आपकी स्नेह भरी दृष्टि और वरदानी बोल से हर एक स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न, समर्थ अनुभव करते हैं। बाबा के सभी बच्चे दिल से दादी गुल्जार का भी शुक्रिया करते, जिन्होंने अपने तन की भी परवाह नहीं की। सदा हाँ जी करके, अपने मुस्कराते हुए चेहरे से हर एक को बापदादा से मिलाया, सम्मुख की भासना दिलाई।

अब तो समय की यही पुकार है कि हर एक बाबा का बच्चा, बाबा से मिली हुई इस रूहानी पालना का रिटर्न दे। बाबा रिटर्न भी यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा स्वयं को टर्न कर ले। पुराने स्वभाव-संस्कार से फ्री हो, कर्मेन्द्रिय जीत, विकर्माजीत, कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करे। इसके लिए समय प्रमाण अब आवश्यकता है हर एक को तपस्वीमूर्त बनने की, तब हमारा मन सदा शान्त, दिल साफ और चेहरा मुस्कराता हुआ रहेगा, हर परिस्थिति में स्थिति अचल अडोल रहेगी।

जैसे हमारा मीठा बाबा सदा चिंता मुक्त, बेगमपुर का बादशाह बनकर रहा, गम का नामनिशान नहीं। ऐसे हम सबको भी अपनी स्थिति बनानी है क्योंकि एक तरफ मुझे बाबा देख रहा है, दूसरे तरफ दुनिया देख रही है इसलिए सदा यही ध्यान रहे कि मुझे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि विजयी रत्न बन, सदा बेफिकर बादशाह की स्थिति में रहना है।

तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें ऐसा ही लक्ष्य रख इस नये वर्ष में विशेष तपस्या द्वारा अपनी ऐसी स्थिति बनायेंगे ना! यह स्थिति ही प्यारे बापदादा को विश्व में प्रत्यक्ष करेगी और विश्व परिवर्तन का महान कार्य सहज ही सम्पन्न होगा। इसके लिए मधुबन से आप सबके पास विशेष जनवरी मास के लिए होमवर्क आ रहा है। सभी बहुत उमंग-उत्साह लगन के साथ एकाग्रचित हो तपस्या करना जी। अच्छा!

सबको बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"सदा कम्बाइन्ड रूप में रहो"

1) सदा यही स्मृति रहे कि मैं रूह उस सुप्रीम रूह के साथ कम्बाइन्ड हूँ। सुप्रीम रूह मुझ रूह के बिना रह नहीं सकते और मैं भी सुप्रीम रूह के बिना अलग नहीं हो सकता। ऐसे हर सेकेण्ड हज़ूर को हाज़िर अनुभव करने से रूहानी खुशबू में अविनाशी और एकरस रहेंगे।

2) मुझ रूह का करावनहार वह सुप्रीम रूह है। करावनहार के आधार पर मैं निमित्त करने वाला हूँ। मैं करनहार वह करावनहार है। वह चला रहा है, मैं चल रहा हूँ। हर डायरेक्शन पर मुझ रूह के लिए संकल्प, बोल और कर्म में सदा हज़ूर हाज़िर है इसलिए हज़ूर के आगे सदा मुझ रूह की जी हज़ूर है। सदा इसी कम्बाइन्ड रूप में रहो।

3) माया तब आती है जब अकेले होते हो। वह पहले बाप से ही किनारा कराती है। डाकू भी अकेला करके फिर वार करते हैं इसलिए सदा कम्बाइन्ड रहो कभी भी अकेले नहीं बनो। मैं और मेरा बाबा, इसी स्मृति में कम्बाइन्ड रहो तो मायाजीत बन जायेंगे।

4) जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आये तो यही स्मृति में रहे कि मैं कम्बाइन्ड हूँ, तो घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अपने सब बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं हल्के हो जाओ तो सदा अपने को खुशनसीब अनुभव करेंगे और फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे।

5) संगमयुग है ही कम्बाइन्ड रहने का युग। बाप से अकेले हो नहीं सकते। सदा के साथी हो। सदा बाप के साथ रहना अर्थात् सदा सन्तुष्ट रहना। बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हो तो कम्बाइन्ड की शक्ति बहुत बड़ी है, एक कार्य के बजाए हजार कार्य कर सकते हो क्योंकि हजार भुजाओं वाला बाप आपके साथ है।

6) जैसे शरीर और आत्मा दोनों कम्बाइन्ड होकर कर्म कर रही हैं, ऐसे कर्म और योग दोनों कम्बाइन्ड हों। कर्म करते याद न भूले और याद में रहते कर्म न भूले क्योंकि आपका टाइटल ही है कर्मयोगी। कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे।

7) अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमतगार नहीं होते। खुदा को खिदमत से जुदा नहीं करो। जब नाम है खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग क्यों करते हो। सदा अपना यह नाम याद रखो तो सेवा में स्वत: ही खुदाई जादू भर जायेगा।

8) सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा के प्रति विघ्न आते हैं, उसका भी कारण सिर्फ यही होता है, जो स्वयं को सिर्फ सेवाधारी समझते हो। लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी हूँ, सिर्फ सर्विस पर नहीं लेकिन गॉडली सर्विस पर हूँ - इसी स्मृति से याद और सेवा स्वत: ही कम्बाइन्ड हो जाती है।

9) जैसे शिव-शक्ति कम्बाइन्ड रूप है, ऐसे पाण्डवपति और पाण्डव यह सदा का कम्बाइन्ड रूप है। पाण्डवपति पाण्डवों के सिवाए कुछ नहीं कर सकते। जो ऐसे कम्बाइन्ड रूप में सदा रहते हैं उनके आगे बापदादा साकार में जैसे सब सम्बन्धों से सामने होते हैं। जहाँ बुलाओ वहाँ सेकण्ड में हाजिर। इसलिए कहते हैं हाजिरा हजूर।

10) वरदाता बाप और हम वरदानी आत्मायें दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह स्मृति सदा रहे तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी क्योंकि जहां सर्वशक्तिमान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। सदा बाप और आप युगल रुप में रहो, सिंगल नहीं। सिंगल हो जाते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।

11) नॉलेजफुल के साथ-साथ पावरफुल स्टेज पर रहो। नॉलेजफुल और पॉवरफुल यह दोनों स्टेज कम्बाइन्ड हों तब स्थापना का कार्य तीव्रगति से होगा।

12) आपके शिव शक्ति के कम्बाइन्ड रूप का यादगार सदा पूजा जाता है। शक्ति शिव से अलग नहीं, शिव शक्ति से अलग नहीं। ऐसे कम्बाइन्ड रूप में रहो, इसी स्वरूप को ही सहजयोगी कहा जाता है। योग लगाने वाले नहीं लेकिन सदा कम्बाइन्ड अर्थात् साथ रहने वाले। जो वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ जियेंगे, साथ चलेंगे..... यह वायदा पक्का याद रखो।

13) स्वयं को बाप के साथ कम्बाइन्ड समझने से विनाशी साथी बनाने का संकल्प समाप्त हो जायेगा क्योंकि सर्वशक्तिमान साथी है। जैसे सूर्य के आगे अंधकार ठहर नहीं सकता वैसे सर्वशक्तिमान के आगे माया का कोई भी व्यर्थ संकल्प भी ठहर नहीं सकता।

14) करनकरावनहार - इस शब्द में बाप और बच्चे दोनों कम्बाइन्ड हैं। हाथ बच्चों का और काम बाप का। हाथ बढ़ाने का गोल्डन चांस बच्चों को ही मिलता है। लेकिन अनुभव होता है कि कराने वाला करा रहा है। निमित्त बनाए चला रहा है - यही आवाज सदा मन से निकलता है। बापदादा सदा बच्चों के हर कर्म में करावनहार के रूप में साथी हैं।

15) जैसे ब्रह्मा बाप और दादा कम्बाइन्ड हैं, उन्हों को कोई अलग नहीं कर सकते। ऐसे फॉलो फादर करने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण और बाप कम्बाइन्ड हैं। जब तक संगमयुग है तब तक बाप और श्रेष्ठ आत्मायें सदा साथ हैं। इसलिए इस कम्बाइन्ड रूप को कभी नहीं भूलना।

16) जितनी शक्तियों की शक्ति है उतनी ही पाण्डवों की भी विशाल शक्ति है इसलिए चतुर्भुज रूप दिखाया है। शक्तियां और पाण्डव इन दोनों के कम्बाइन्ड रूप से ही विश्व सेवा के कार्य में सफलता प्राप्त होती है। इसलिए सदा एक दो के सहयोगी बनकर रहो। जिम्मेवारी का ताज़ सदा पड़ा रहे।

"आत्म अभिमानी स्थिति ऐसी बनाओ जो बाबा को याद करना न पड़े, स्वतः याद आती रहे" (दादी जानकी)

कितने मीठे लग रहे हो, बैठे साइलेंस में हो। यह साइंस है, यह साइलेंस है। ऐसी सभा को देख कौन याद आता है? कमाल है बाबा की, दुनिया में धमाल लगी पड़ी है और हम बाबा की कमाल देख रहे हैं तो कितना मीठा बाबा है! हमको भी मीठा बनाने के लिए मुरली ऐसी चलाता है। आज की मुरली पर सभी ने सुनके मनन चिंतन किया होगा। मुरली का मनन चिंतन पास विथ ऑनर में ले आयेगा। पास्ट इज पास्ट। प्रेजेन्ट मैं कौन हूँ, किसकी हूँ और मैं क्या कर रही हूँ। मेरी यह तीन बार की ओम् शान्ति ने प्रैक्टिकल लाइफ में बहुत मदद की है। मैं कौन, मेरा कौन? मैं कौन तो इससे लाइट हो जाते हैं। मेरा कौन तो इससे माइट आ जाती है क्योंकि सर्वशक्तिवान है। ऐसे समय में बाबा ने कर्मों की गुह्य गति का इतना रहस्य सुनाया है जिससे हम जितना ऊंचा बनना चाहें बन सकते हैं।

आप लोगों के चेहरे देख मुझे कितनी खुशी हो रही है। बाबा भी हमको देखता है हम बाबा को देखें। बस। तो सोचो मन वाणी कर्म कैसा होगा? दो मिनट सभी इस स्मृति में आओ, हम बाबा को देख रहे हैं, बाबा हमें देख रहा है। तो अन्दर का आवाज़ है बाबा, आपने लाखों-करोड़ों में से मुझे चुन लिया, यह नशा किसको है? सारी दुनिया में करोड़ों क्या अनगिनत मनुष्य हैं, (सभा में जापान की दो बहनें बैठी हैं) उसमें भी भगवान ने कोई देश को छोड़ा नहीं। जिन्होंने बाबा को जाना, पहचाना वो कौन? सिर्फ बाबा ऐसे ही नहीं कहते हैं मेरा बाबा कहो। सब बोलो मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, शुक्रिया बाबा, जो ऐसे संगठन में बैठने लायक हैं। शान्ति में बैठे हैं।

मुख्य बात है भले सभी अपने-अपने देशों में बाबा को याद करते होंगे, पर सभी नहीं करते हैं मैं जानती हूँ। कोई-न-कोई कार्य-व्यवहार में बिजी हैं, मैं बाबा को देखती रहूँ, बाबा मुझे देखता रहे। जितना भी बाबा को देखते हैं साकार अव्यक्त निराकार तीनों ही दिखाई पड़ते हैं। ऐसे पहचान से देखते हैं। भगवान को पहचानने के लिए ऋषि-मुनियों ने बहुत कोशिश की, आखिर कहा नेती-नेती। जो आज बाबा ने कहा विलायत में भी सर्वव्यापी का ज्ञान लेके गये। शुरू हुआ यहाँ से जहाँ बाबा आया, सतयुगी दुनिया बनाया और हमको सतयुग में आने लायक बनाया। दुनिया बनाई जिसमें जो पूर्वज हैं एडवांस पार्टी गई है, सेवा कर रही है। मैं उन्हों को देखती हूँ मेरे पास सीटिंग रूम में बेड़ रूम में दोनों जगह पूर्वजों का फोटो लगाके रखा है। बाबा के साथ वो पूर्वज जो हमारे थे, उन एक एक की शक्लों को देखो।

सिर्फ बाबा कहो भगवान है ना! वो भगवान है हम भाग्यवान हैं। न सिर्फ भाग्यवान हैं, भागीरथ एक ही है। उसको मैं पहले से पहचानती हूँ, शिवबाबा के आने से पहले, यह तभी भी ऑर्डनरी मनुष्य नहीं था। यह तन भाग्यशाली है। बाबा का तन कभी प्लेन में नहीं गया, ट्रेन में चढ़ा था। मैं जब पुणे में थी तो बाबा तीन बारी पुणे में आया था, मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, मुझे बहुत प्यार करता था। बॉम्बे के लिए कहता था मायावी नगरी है। बाबा कभी पलंग पर नहीं सोया, जहाँ भी बाबा रहा, गया खटिया पर ही सोया है। ऐसा बाबा हमको पालना देने वाला, पढ़ाने वाला। भले सेवा अर्थ सेन्टर्स बनें, वहाँ भी वातावरण कैसा बनाना है जैसे मधुबन, तो यह बाबा की कमाल है। बाबा सिम्पल, भले शिवबाबा भी न कहो ब्रह्माबाबा भी न कहो। दिल कहे बाबा शुक्रिया, इतना शब्द दिल कहती है बाबा शुक्रिया। भले सेवा जो आप सिखाते हो वो भाग्य है औरों को बतलाना। मैं टीचर नहीं हूँ परन्तु जो बाबा ने सिखाया है वो लाइफ में है, आप समान बनाना है। हमको बाप समान बनना है। आपको आप समान बनाना है।

हरेक के लिए दिल में मेरी भावना है जैसे बाबा सिम्पल है, ऐसे हर एक सिम्पल और सैम्पुल बनें। बाबा मुख से शब्द पीछे निकलता है, बोलने के पहले ऑटोमेटिक आत्म-अभिमानी स्थिति हो जाती है। थोड़ा भी देहभान है तो याद करना मुश्किल है। बाबा को याद करना न पड़े, आती रहे। तो सारे दिन में, रात को स्वप्नों में भी जो भी कोई मिलते हैं, क्या बात करें इसलिए मेरे पास शक्ति भवन में कोई भी आयेगा, भले आये पर दिल कहता है यह बाबा को याद करे, मेरे से मिलने न आये। बाबा मिलन का जो अनुभव है, भक्ति में याद करते थे, पुकारते थे फिर सर्वव्यापी के ज्ञान से शान्त हो जाते थे। अन्दर भगवान को बाबा कहना, मुझे नहीं आता था। भगवान जो सारे विश्व का कल्याणकारी भोलानाथ है, बाबा की जितनी जान-पहचान वा ज्ञान ऐसा है, जो तीसरा नेत्र खुल गया है।

झाड़ याद दिलाता है, हम नीचे तपस्या में बैठे हैं। बनियनट्री का मिसाल एक्यूरेट है। झाड़ सारा फैला हुआ है, फाउण्डेशन है ही नहीं। ऐसी दुनिया में भी बाबा आ करके दुनिया है पराई, पराई से क्या प्रीत। हमारी नहीं है, अभी इस दुनिया से उस नई दुनिया में ले जाने के लिए बाबा ने अपना बना लिया है इसलिए शुक्रिया बाबा, अन्दर से आवाज़ आता है। संसार में रहते यह भी हमारा ईश्वरीय परिवार का संसार है।

गुल्जार दादी को कैसे निमित्त बनाके साकारी भासना दी है। कोई नहीं कहेगा मैंने साकार में बाबा को देखा नहीं है।

आज की मुरली ने तो कान खोल दिये, अपने को चेक करने में अच्छा लगा। बाबा का बनने के बाद हमारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति से कदम पर कदम में पदमों की कमाई जमा होती रहती है। बाबा ने कहा है जैसा हमारा पुरुषार्थ होगा, ऐसा हमारा मन्दिर बनेगा द्वापर में। सतयुग में तो महल होंगे। द्वापर से ले करके पुजारी लोग हमारी पूजा करेंगे इसलिए अभी पूज्यनीय क्वालिटी बनना है। बनना अभी है, सतयुग में तो राजाई है, पर द्वापर में भी हमारे पुजारी हमारी पूजा करेंगे। तो

पूज्यनीय योग्य बनना माना न सिर्फ महिमा करे, न सिर्फ गायन करे पर दिल से सच्चाई और प्रेम, जैसे बाबा की सूरत और सीरत अनुभव कराती है ऐसे हम बच्चों को भी अपनी सूरत सीरत बनानी है। मैं आइने के आगे बहुत थोड़ा बैठती हूँ। यहाँ यह जो सूक्ष्म आइना है कितना श्रृंगार कर रहे हैं, बाबा कर रहा है। जो श्रृंगार कभी बिगड़े नहीं या कभी कैसा श्रृंगार, कभी कैसा करेंगे वो शोभा नहीं देता, वो पुज्यनीय क्वालिटी नहीं बनेंगे। अभी चांस है आपको ऐसा बनने का, जिसे बाबा देखे तो खुश हो जाये। ऐसी स्थिति हमारी हो तो हम सब ऐसे बाबा की नज़रों से निहाल हो जाएं। ऐसे मीठे बाबा को आह्वान करने के लिए अभी ऐसी अपनी स्थिति बनानी है। अपनी स्थिति बनाना, बाबा की मदद बहुत है पर अन्दर लगन बहुत हो। हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। हिम्मत के साथ उमंग-उत्साह भी बड़ी अच्छी कीमती चीज़ है। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"प्रैक्टिकल लाइफ में ऐसी अच्छी-अच्छी बाते हों जो हिम्मत विश्वास, उमंग-उत्साह से अचल अडोल स्थिति बन जाये, न चलायमान हों, न डोलायमान हों"

ओम् शान्ति कहने में यह अंगुली बहुत काम करती है, यह जो चार और अंगुलियां हैं ना, छोटी है चाहे मोटी है पर सब काम की हैं। इतनी बड़ी सभा देख खींच होती है, रचता बाबा की रचना को देख, इतनी सुन्दर रचना बैठी है। सब आत्मायें हैं, सभी देहभान को छोड़ देह से न्यारे रहने की अनुभवी हैं क्योंकि मधुबन आना, शान्तिवन में बैठना और यह अभ्यास करते रहना इसके सिवाए यहाँ और तो कोई काम नहीं। बना बनाया अच्छा खाना मिलता है, सब कुछ सहज प्राप्त होता है बाकी काम क्या है? यह श्वांस, संकल्प और समय को सफल करने का काम करना है। वैसे बात करते तो श्वांस चढ़ता है पर यहाँ बैठे श्वांस, संकल्प, समय सब बहुत अच्छा सफल होता है।

आत्मा शान्त है तो कोई संकल्प नहीं है, तो जैसे बाबा सत् है, चैतन्य है तो हम बच्चों को भी शान्ति और सच्चाई के आधार से ऐसा आनंद स्वरूप बनाता है। कोई भी इधर उधर की बात यह कान न सुनने के लिये हैं, न सुनाने के लिये हैं। सच्चाई और प्रेम के सिवाए अन्दर में और कुछ है ही नहीं। एक मिनट अच्छा मुस्कुराओ सभी, बाबा देखेगा और कहेगा बच्चे खुशी में इतना अच्छा मुस्कुरा रहे हैं तो कोई मुश्किलातें नहीं हैं, फ्री हैं। एक दो को देख, किसका भी कोई स्वभाव नहीं सब मेरे बाबा के बच्चे भाई भाई हैं। तो भाई भाई की दृष्टि एकदम आत्म-अभिमानी बनाती है। अभी सेवा में बहन भाई हैं, बहन भाई कितने मीठे हैं। ऐसी सभा जो यहाँ लगती है शान्तिवन में, सारे कल्प में कभी ऐसी सभा नहीं होगी। ऐसा हॉल, ऐसा स्थान सारे विश्व में कहीं नहीं होगा। ड्रामा अनुसार सारा विश्व देखने को मिला है। वन्डर तो यह है सफेद बालों में और ही सुन्दर लगते हैं क्योंकि बाबा का बनने से सुख मिला है इलाही। बाबा को भी हमको देख, दिनप्रतिदिन वृद्धि देख कितनी खुशी होती है। पहले तो थोड़े थे, अभी बाबा के बच्चे लाखों हो गये हैं, वन्डर है।

जैसा संग वैसा रंग कमाल है उसकी। मुझे दिल होती है मैं भण्डारे में जाऊं कितना अच्छा भोजन सभी को मिल रहा है। जैसा अन्न वैसा मन सभी को यह फायदा हुआ है। इन दो बातों से समानता में आ गये हैं, बाबा सभी को ब्रह्माभोजन मुख में खिलाता है। बाबा ने एक बारी हाथ में ऐसे ग्राही (भोजन की) लेके कहा था बच्ची पहले तेरे को खिलाऊं या बाबा को खिलाऊं! मैंने कहा मैं बाबा को खिलाती हूँ, आप मेरे को खिलाओ। कितनी सुन्दर सीन होगी वो। बाबा ने अपने साथ भोजन पर बिठाया, ग्राही हाथ में है, मैंने भी ग्राही बनाई, मैंने कहा मैं पहले बाबा को खिलाती हूँ फिर बाबा ने मेरे को खिलाया। तो कितना सुख मिला है, कितना प्यार मिला है।

मुख से क्या बोलना है वो बाबा मुरली में सिखाता है इसलिए और कुछ बोलना आता ही नहीं है। बाबा कैसा टीचर है! जैसा है बाप, फिर माँ और बाप दोनों रूपों से तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे, कोई न जाने तुम्हरा अन्त, ऊंचे ते ऊंचा भगवंत... यह भक्ति में हम गीत गाते थे। जिसका अन्त कोई नहीं जानता, कौन है कैसा है वो अन्तर बताया है। हमको पता है वो कौन है? वो स्मृति में रहने की दृष्टि ऐसी देता है जो हमारी वृत्ति में उसकी स्मृति है। उनकी स्मृति अडोल अचल बनाती है। कोई छोटी-मोटी बात में हिलना हम नहीं जानते। बातें आई सो गई, सोचने की जरुरत नहीं है। बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश... यह ऐसे ऐसे शब्द जो हैं ना। याद रखो तो कितनी मदद मिलती है। हिम्मते बच्चे मदद दे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। ऐसी अच्छी-अच्छी बातें प्रैक्टिकल लाइफ में हों तो हिम्मत, विश्वास, उमंग-उत्साह, अचल अडोल स्थिति, न चलायमान न डोलायमान बन जायेंगे। तो ऐसी मीठी-मीठी बातें अपनी अवस्था को अच्छा बनाने के लिए बाबा बहुत अच्छा सुनाता है। मेरे को तरस पड़ता है कोई पुरानी या पराई बात भूलते नहीं हैं, बड़ा तरस पड़ता है। अरे, इसे छोड़ो ना। जो अवस्था अभी बनेगी अन्त मते सो गति वो होगी। औरों के लिए भी बाबा ने कहा है प्रेरणा देने लायक अवस्था बने। ऐसी अचल अडोल स्थिति हो जो किसी को ऐसा बनने के लिए खींच हो, प्रेरणा आये।

हमने अपने कमरे में पूर्वजों का फोटो रखा है। पूर्वज वो जो सबका स्नेही व शुभचिंतक हो। पूर्वजों का कैसा आपस में प्यार था, सदा ही एक दो को देख कितने खुश होते थे। बाबा तो भागीरथ है, हम फिर पदमापदम भाग्यशाली हैं, जहाँ कदम रखें वहाँ बाबा की याद में रहें और औरों को भी याद आ जाये। तो श्वांस, संकल्प, समय सब सफल हों। जैसे मन बुद्धि संस्कार आत्मा में है। आत्मा इतनी छोटी और ज्ञान

इतना बड़ा आत्मा में भर जावे। फिर मन शान्त है, बुद्धि में इतना बड़ा ज्ञान समा गया वो संस्कारों में चला गया, जो कल्प-कल्प वही संस्कार चलते रहेंगे। कल्प पहले भी यह बने थे, अभी ऑटोमेटिक वो संस्कार बाबा की नॉलेज से बनते जा रहे हैं। पढ़ाई में टीचर याद जरुर आता है कि किसने पढ़ाया है और क्या पढ़ाया है? कैसे पालना दी है? वन्डर है। जो हर आत्मा में, कोई भी भाषा वाला है, कोई भी धर्म वाला है, पहचान आ जाती है। भूल जाता है मैं कौन-से धर्म की हूँ, कौन-से देश की हूँ क्योंकि वास्तव में हम सभी का देश परमधाम है, जो बाप का घर है सो मेरा घर है। वन्डर है ना, याद है ना हमारा घर कौन-सा है? अब घर जाना है। जब कोई शरीर छोड़ता है तो यह गीत बजाते शमशान तक ले जाते हैं। हमारी बुद्धि में भी है कि अब घर जाना है। कौन-सा घर है? जो बाप का घर है वो मेरा घर है। ऐसे बाबा को घर में याद करो, कौन-सा घर है? याद करो कहाँ है परमधाम? निमित्त यहाँ शरीर में हैं फिर तो सबको घर जाना है। हमको तो बाबा के साथ घर जाना है फिर सुखधाम में आना है, औरों को दु:खधाम से छुड़ाना है। इस दुनिया में बिचारे जो दु:खी हैं, तरस पड़ता है, अभी उनको भी पता पड़े यह घर जा रहे हैं। तो हमको घर जाना है, सबको बताना है। अभी घर जाने का टाइम है इसलिए कर्म अकर्म विकर्म की गति जो बाबा ने समझाई है, ऐसे बाबा को याद करना नहीं पड़ता है, याद स्वत: आता है। घर जाने के पहले सुख-शान्ति सम्पन्न बनना है। 16 कला सम्पूर्ण बनना है। तो यह सारा प्लान प्रैक्टिकल जो कल्प पहले हुआ है वही बाबा बता रहा है। नई बात नहीं है, कल्प पहले भी हुआ है। ओके, ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

"ऐसे निर्विकारी बनो जो विकारों का कोई भी अंश मात्र भी न रहे, अशरीरी बन विकर्मों का नाश कर दो"

बाबा ने आज मुरली शुरू करते ही ओम् शान्ति कहा। आत्मा शान्त स्वरूप है और शान्तिधाम की रहने वाली है। हर आत्मा का असली निवास स्थान शान्तिधाम है। जब शरीर में आती है तो शान्ति के साथ सच्चाई और प्रेम स्वरूप है क्योंकि परमात्मा के बच्चे हैं।

शान्तिवन में कितनी अच्छी रौनक लगी हुई है, पूरा हॉल भरा हुआ है। मेरा श्वांस ऐसे चलता नहीं है परन्तु यहाँ की खैंच ले आती है। क्या बताऊं! बाबा ने इतना दिया है जो धरती को कागज़ बनाओ, पेड़ों को कलम बनाओ, सागर को स्याही बनाओ... इतना सुनाया है। हर रोज़ जो हमको मुरली मिलती है कितना बाबा ने हमको प्यार से पढ़ाया है, अटेन्शन खिंचवाया है, बाबा कहते बच्चे अपना कैरेक्टर अच्छा बनाओ।

बाबा से हम दृष्टि लेते हैं पर देखें हमारा चरित्र कैसा है? शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा के रथ को लिया सोच समझके, जब बाबा को देखते हैं साकार अव्यक्त निराकार तीनों की पहचान है। हर एक बाबा को देख रहा है, बाबा अव्यक्त रूप से गुल्जार दादी के तन में कैसे हमारे सामने अपनी नज़र से निहाल करने आते हैं। बाबा अपनी नज़र से हमको क्या से क्या भासना देता है। वो मेरा बाबा है, बाबा कहता है तुम मेरे बच्चे हो। टीचर के रूप में कितनी अच्छी पढ़ाई पढ़ा रहा है। पढ़ाई पर जब मनन चिंतन मंथन करते हैं तो ज्ञान के एक एक बोल रत्न के बराबर हो जाते है। रत्नों की बहुत वैल्यु होती है।

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा। आत्मा की गहराई में जाओ, आत्मा शरीर में होते हुए मैं-पन वा देह के भान का अभिमान नहीं है। कैसे बाबा ने देह में होते हुए देहभान से छुड़ा दिया है। पहले देह का अहंकार था, अहंकार नहीं था तो अभिमान थोड़ा-थोड़ा था। अभी बाबा इशारा दे रहा है देह के भान से परे रहो। जब इतने सब लोग शान्ति में शान्त बैठे हैं। सबका अटेन्शन है कि मैं कौन, मेरा कौन.. अन्दर से श्वांसों श्वांस यह स्मृति रहे मैं कौन? मेरा कौन? बाबा ने आत्मा की समझ दी है फिर यह ड्रामा है, इसमें हर आत्मा का अपना पार्ट है। दो का एक जैसा पार्ट नहीं हो सकता है। यह इतनी अच्छी विधि जो है हरेक का पार्ट अपना है। यह स्मृति, रिगार्ड रखने का अच्छा रिकॉर्ड बना देती है। ड्रामा में हर आत्मा कहाँ से भी आती है चाहे देश चाहे विदेश से, सब बाबा के बच्चे हैं। जब भी देखते हैं देह भान से परे हैं, सम्बन्ध से न्यारे हैं। न्यारे बनने से बाबा का प्यार खींच लेते हैं। जरा भी न्यारेपन की कमी है, देह के भान में हैं तो बाबा का प्यार नहीं खींच सकते हैं। बाबा तो हर आत्मा को घर जाने के लिए रोज़ इशारा दे रहा है कि बच्चे घर चलना है।

परमधाम की सब आत्मायें जब नीचे आयेंगी तब यहाँ से जाना शुरू हो जायेगा। हम तो बाबा के साथ पहले जायेंगे इस बात की खुशी है। यहाँ बाबा ने कई आत्माओं से सेवा कराई है, करा रहा है। भगवान है मेरा बाप, सेवा है मेरा भाग्य। यहाँ भगवान है, यहाँ सेवा है। ऐसी श्रीमत बाबा ने हम बच्चों को दी है। जो अपने को मनमत परमत से फ्री कर दिया है, इस बात की मुझे बड़ी खुशी है। ऐसे जो फ्री हैं वो सच सच हाथ उठाओ क्योंकि श्रीमत में बहुत पॉवर है, स्वयं भगवान की श्रीमत है। इतना समझाके इशारा देता है, डिटेल में भी समझाता है, इससे ही इतनी सारी सेवायें वृद्धि को पाई हैं।

जब अधर्म का नाश होने वाला है तो हमारे में कोई भी विकर्म रहा हुआ हो तो उसको विनाश के पहले नाश कर दो शंकर के रूप से यानि अशरीरी अवस्था से, लक्ष्य के अनुसार विष्णु समान बनने का पुरुषार्थ करना है। मुझे कमल फूल समान रहना है, कितनी अटेन्शन की बात है। अन्दर ही अन्दर यह अभ्यास चलता रहे। बाबा ने मुझे

अच्छा कमल का फूल बनाया है, ऐसी किसी को फीलिंग है! दो-तीन दिन से बाबा ने गुणवान बनने पर ध्यान खिंचवाया है। निर्विकारी बनना है, कोई विकार की जरा भी अंशमात्र न हो इसके मिसाल बनो। बाबा ने शुरू में दिल्ली बॉम्बे में ऐसे मिसाल तैयार किये थे क्योंकि बाबा के बोल में शक्ति इतनी है, काम महान शत्रु है। बस, समझा। जरा भी अंश मात्र काम की हो तो वो ब्राह्मण नहीं कहला सकता है। जिसके अन्दर से काम विकार गया तो उसका क्रोध भी गया। जरा भी काम का अंश होगा तो क्रोध भी होगा। चलो काम क्रोध तो गया, पर लोभ मोह थोड़ा भी है तो वो बाबा का बच्चा नहीं है। लोभ के साथ बाबा ने इतना अथाह ज्ञान धन जो दिया है, मनी भी दी है तो मान भी दिया है।

जब सेवायें शुरू हुई मेरे को चित्रों पर समझाना बहुत अच्छा लगता था। शुरू में जो बाबा ने बनवाया था, वही चित्र ऊपर में हिस्ट्री हॉल में है। ऐसे इतने बड़े चित्र बनवाके मुझे वहाँ भेजे और कहा कि इन चित्रों पर लाठी ले करके समझाओ। कितना भी समझाओ, कैसा भी समझाओ परन्तु फिर भी कईयों की नींद कुम्भकर्ण जैसी है। ब्रह्माकुमारियां ज्ञान सुना रही हैं वो सोया हुआ है... यह देखा पढ़ा होगा। अभी मैं देखती हूँ बाबा के सामने बैठ मुरली सुनते भी कोई उबासी देगा या थोड़ा ऐसे झुट का खायेगा। ऐसे जिसको मुरली सुनते झुटका आता है, हाथ उठाओ। सच बताओ। क्योंकि मुरली में जादू है ना, मुरली अन्दर ही अन्दर काम करती है। बाबा सुना रहा है परन्तु मुरली में जादू है। बाबा हमारा कितना मीठा है, कितना प्यारा है, तो सभी बोलो मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। बाबा भी कहता है अच्छा है बच्चे दिल से कहते शुक्रिया, यह भी एक रिवाज़ है। थोड़ी भी किसी की सेवा करो ना तो कहेंगे थैंक्स। मैं कहती थैंक्स नहीं करो यह जो आपस में मिल करके प्यार से मिलना हुआ, दो शब्द न भी बोलो सिर्फ ऐसे मुस्कुराओ तो कितना अच्छा लगता है।

गुल्जार दादी के तन में बाबा कैसे आता है, कैसे मिलता है, हमारे से बातें करता है। वो टाइम वो घड़ी हम सबके दिल में बाबा बाबा बाबा ही होता है। जैसे दादी बैठती है यहाँ, हम वहाँ बैठ जाते हैं। बाबा आया फिर हम यहाँ मिलने आते हैं, बाबा जा रहा है, क्या यह खेल है अव्यक्त पार्ट का! ओ.के.। ओम् शान्ति।

दादी गुल्जार - 2007

''अन्तिम पेपर की तैयारी - बार-बार अशरीरी बनने की ड्रिल करो''

ओम् शान्ति। हमारे बाबा का दिया हुआ एक महामंत्र है। इस एक ही शब्द में हमें अपने स्वरूप की, बाबा की और अपने घर की स्मृति आ जाती है क्योंकि हम भी शान्त स्वरूप हैं। हमारा बाबा भी शान्ति का सागर है और हमारा घर भी शान्तिधाम है। तो ओम् शान्ति कहने से ही शान्ति का अनुभव होता है। अपने स्वरूप में स्थित होने से शान्त-स्वरूप हो जाते हैं। तो जहाँ शान्त-स्वरूप हो जाते हैं वहाँ हलचल ऑटोमेटिकली बन्द हो जाती है।

संगमयुग का जो अन्तिम काल है, उस समय की हमको क्या तैयारी करनी है? उसकी तैयारी कर ली है या करनी है? अन्तिम समय के हिसाब से बाबा ने दो शब्द कहे हैं - एक तो अचानक होना है और एवररेडी रहना है। तो सबको ये दो शब्द याद रहते हैं ना? कभी भी बुलावा हो सकता है नेक्स्ट जन्म के लिए। इसीलिए बाबा ने अचानक के लिए कई बातें सुनाई हैं। जैसे आप अपनी हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो क्योंकि सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है। इसलिए ऐसे समय पर नष्टोमोहा भी रहो और स्मृति-स्वरूप भी रहो। तो अन्तिम पेपर में पास होने के लिए, अभी से ही हमको क्या लक्ष्य रखना चाहिए, उसकी योजना अभी से बना लेना चाहिए क्योंकि सेकण्ड का पेपर होना है। सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है इसीलिए बाबा कहते अभी से अशरीरी भव का अभ्यास करना क्योंकि अन्त हमारी श्रेष्ठ हो उसके लिए अशरीरी भव का अभ्यास बहुत जरूरी है। यह मन चारों ओर के दृश्य देख करके विचलित होगा लेकिन इस मन को कन्ट्रोल करना, मन की रूलिंग पॉवर हमारे हाथ में हो तो रूल करना, कन्ट्रोल करना, यह अभ्यास हो तब एक सेकण्ड में अशरीरी हो सकेंगे। कोई भी आकर्षण हमें खींचे नहीं तभी हम पास विथ ऑनर होंगे। तो सेकण्ड में अशरीरी बनने का अभ्यास हमको अभी से करना पड़ेगा।

हम जिस बात को नहीं चाहते हैं वो होता तो है यह सबके जीवन का अनुभव है। हम समझते हैं यह नहीं हो, कम-से-कम वेस्ट थॉट जो चलते हैं, उसके लिए भी सभी अभ्यास करते हैं कि व्यर्थ विचार नहीं आने चाहिए। लेकिन फिर भी आ ही जाते हैं, भिन्न-भिन्न रूप से माया आ जाती है, जो चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है, तो न चाहते भी क्यों आती है? कारण है बहुतकाल से बॉडी-कॉन्सेस में रहने का अभ्यास जो नेचुरल है वो विघ्न डालता है। तो यह अशरीरी बनने का अभ्यास अगर हम बहुतकाल से नहीं करेंगे तो बहुतकाल की मदद हमको नहीं मिलेगी।

तो बाबा कहते हैं मन के मालिक बनके बार-बार शरीर के भान से परे अशरीरी रहने का अभ्यास बहुतकाल का आवश्यक है। इसलिए इस बारी बाबा ने यह 5 स्वरूपों का अभ्यास बीच-बीच में बार-बार करने का होमवर्क दिया है। बार-बार नहीं तो कम-से-कम 8 बारी तो ड्रिल करने का होमवर्क दिया है क्योंकि बार-बार करने से ड्रिल का लिंक जुटा रहता है। अगर एक ही बारी आपने 4-5 बारी करके अपना काम पूरा कर दिया, अब जो किया वो तो अच्छा है रिजल्ट तो उस समय अच्छी होगी। लेकिन सारे दिन का आपका निरंतर लिंक रहे, वो नहीं रहेगा। तो लिंक के लिए बाबा ने अलग-अलग टाइम 8 बारी करने को कहा क्योंकि अगर कोई भी चीज का लिंक टूट जाता है और उसे फिर जोड़ा जाता है तो उसमें फ़र्क हो जाता है लेकिन लिंक जुटा ही रहे तो वो ताकत एक और होती है। इसलिए बाबा ने 8 बारी यह अभ्यास करने को कहा है।

तो आत्मा रूप में स्थित होने की बाबा ने बहुत अच्छी एक युक्ति सुनाई है कि करावनहार की स्मृति से इन कर्मेन्द्रियों से काम लेंगे तो मालिकपने का नशा रहेगा, खुशी रहेगी। तो मैं आत्मा करनहार हूँ, करावनहार हूँ इस कर्मेन्द्रियों रूपी कर्मचारियों की भी मैं मालिक हूँ, तो मन-बुद्धि-संस्कार यह भी मेरे हैं, मैं नहीं हूँ। मैं शिवबाबा के नयनों का तारा हूँ, मैं शिवबाबा के दिलतख्त पर बैठने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ या मैं आत्मा परमधाम की यात्रा में जा रही हूँ, इस प्रकार से जो भी स्वमान बाबा देते हैं, उस स्वमान के स्वरूप अनुसार हमारी स्मृति बनी रहे तो वो शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करायेगी। तो मैं आत्मा हूँ लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ यह स्मृति सारे दिन में बीच-बीच में ला करके स्मृति-स्वरूप बनने की कोशिश करते रहना चाहिए। भले हम जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ, लेकिन फिर भी स्वमान से जाने और आत्मा स्वरूप में अनुभव करें तो वो नशा और खुशी बहुत ही सुखदाई न्यारा और प्यारा अनुभव करायेगी।

तो मैं आत्मा हूँ इस अनुभूति में रहें। आत्मा का पाठ बहुत पक्का होना चाहिए। किसी से बोलते हैं, किसी को भी देखते हैं तो ऐसा स्पष्ट अनुभव हो, हम आत्मा आत्मा से बात कर रहे हैं, देख रहे हैं। मस्तक में देखते आत्मा की स्मृति से बात करो, एक दो को मिलो तो हमारी यह प्रैक्टिस चाहिए - किससे भी बात करें, किसे भी देखें तो स्वरूप की स्मृति अपनी भूले नहीं। अपने असली स्वरूप की नॉलेज है लेकिन उसकी अनुभूति में कम रहते हैं इसलिए बार-बार वही फिर फिर न चाहते भी बॉडी-कॉन्सेस की पुरानी स्मृति इमर्ज होती रहती है। तो अभी जो भी कहते हैं ''मैं आत्मा अशरीरी हूँ'' तो यह कहने से ही अशरीरीपन का अनुभव होना चाहिए। ''मैं आत्मा हूँ'' तो इस स्वरूप का अनुभव होना चाहिए। आत्मा समझने से परमात्मा की याद तो स्वत: ही आयेगी क्योंकि आत्मा का कोई से कनेक्शन नहीं है सिवाए परमात्मा के सिवाए।

अब सोचो कि मैं आत्मा शान्त-स्वरूप आत्मा हूँ तो वो तुरन्त साथ-साथ अनुभव होना चाहिए सिर्फ नॉलेज नहीं लेकिन अनुभव होना चाहिए। तो इस अटेन्शन में जब हम रहेंगे तभी हमारा अन्तकाल सुहाना होगा। बहुत करके भक्ति जो करते हैं वो भी यही कोशिश करते हैं कि मेरा अन्त बहुत श्रेष्ठ अच्छा हो जाये। तो हमारा भी अन्तिम काल ऐसा श्रेष्ठ हो, उसके लिए यह प्रैक्टिस चाहिए, भले काम में बिजी हो लेकिन बीच-बीच में और ही प्रैक्टिस यह करो कि जिस समय बहुत बिजी हो, उस समय ट्रायल करो मैं एक सेकण्ड में अशरीरी बन सकता हूँ? अगर यह प्रैक्टिस होगी तो जो बाबा चाहता है कि मेरे एक एक बच्चे के चेहरे से, चाल से यह पता पड़े कि यह किसका बच्चा है? यह कोई विशेष आत्मा है, साधारण आत्मा नहीं है, यह महसूस हो सामने वाले को, तब तो बाबा प्रत्यक्ष होंगे, यही देख करके कहेंगे कि वाह! यह कौन है! किसके हैं! तो हमको अभ्यास ऐसा करना चाहिए कि मैं सारे दिन में आत्म-अभिमानी प्रैक्टिकल कितना टाइम रह सकता हूँ? ठीक है, यह चेक करो और अपने में चेन्ज लाओ। अच्छा – ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन -1999

1) भगवान के घर में हम सब भगवान के बच्चे बैठे हैं, जो 63 जन्म के पुराने भक्त हैं। हमें भक्ति का फल स्वयं भगवान मिला है, इसलिए दिल से निकलता - ओ सहारा देने वाले दिल कहे तेरा शुक्रिया... सदा यही खुशी का गीत गाते ओ बाबा, ओ मेरे भाग्य विधाता, तूने मुझे अपनी गोदी में बिठा लिया। हमें सब प्रकार के वरदान दे दिये, बिन मांगे हीरे मोती, माणिक सब दे दिये...। बाबा ने हमें अपना सर्वस्व दे दिया। हम ज्ञान सूर्य बाप और ज्ञान चन्द्रमा माँ के लक्की सितारे हैं। बच्चे हैं। उसने हमें चमकता हुआ कोहिनूर का हीरा बना दिया। हम वह शिव शक्ति पाण्डव सेना हैं जिनको स्वयं भगवान ने टाइटिल दिया है। बाबा ने हमें जहान का नूर बनाया है, जो सारी विश्व का जीवन सहारा है, जो सर्वशक्तिमान है उसने हमें प्यार के झूलों में झुलाया है। उसने हम अबलाओं को, कमजोरों को, दुर्बलों को आकर बलवान बनाया है। इसलिए हम यही गीत गाते ओ बाबा, ओ मीठा बाबा, तूने हमें सब कुछ दे दिया। जीवन में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं जो मैं आपसे माँगू।

2) जब मैं किसी के मुख से सुनती हूँ कहते हैं बाबा आप शक्ति देना... मैं कहती शक्ति भी क्यों मांगते। क्या मेरे मांगने से वह देगा। हम मांगने वाले भक्त नहीं हम तो अधिकारी बच्चे हैं। अधिकारी बच्चों के मुख से जब ऐसे बोल निकलते तो मैं यह बोल कानों से सुनना नहीं चाहती। अरे लुटाने वाला कहता तू लूट.. जितना चाहे उतना लूट। जितना लूटेंगे लुटायेंगे उतना भरतू होते जायेंगे। वह सागर है, कोई तालाब नहीं जो सूख जायेगा। ऐसा निरन्तर खुद को स्वमान में रखो, नशे में रहो तो स्थिति कभी डगमग नहीं होगी।

3) बाबा ने हम बच्चों पर चोटी से पांव तक ऐसा वरदान का हाथ फेर दिया जो हमें कोई हिला नहीं सकता। सिर्फ दिल से गीत गाओ - मुझे तो मिल गया - कौन? प्यारा बाबा। जितने दिल से जिगर से रुहरिहान कर सकते, खुशी में झूल सकते उतना झूलो - यही हमारे जीवन की लाटरी है। कोई कहते मुझे यहाँ बहुत प्यार मिला, आनन्द मिला, अच्छा योग लगा... मैं कहती बस हम उसकी दिल को सच्चा नहीं मानती। अरे दिल, जिगर से यह बोल निकले कि मेरा बाबा मुझे मिल गया। आप नये-नये फूलों को तो बाबा-बाबा कह उसके प्यार में डूब जाना चाहिए। एक भौंरा भी फूल के पीछे फिदा हो जाता, उसमें छिप जाता तो खुद से पूछो हमें फूल बनाने वाला बाप, उस पर मैं भौरे की तरह फिदा हूँ। दिवानी हूँ, मर गई हूँ, मिट गई हूँ या फिदा हूँ?

4) हमारा बाबा है जादूगर... हमें उस जादूगर की जादूगरी पर फिदा हो जाना है। सचमुच उसने हमें अपना जादू लगा दिया... मैं कहती शल ऐसा जादू तो सबको लगे इससे कोई जुदा न रह जाए। यह जादू एक-एक पर लगे तो अहो भाग्य। भगवान का जादू लगे इनसे बड़ी दुनिया में कोई चीज़ नहीं।

5) आप सब अपने पास एक तराजू रखो - उस तराजू में एक तरफ रखो बाबा, दूसरे तरफ अपने जन्मों का, कर्मों का बन्धन... हरेक के अनेक जन्मों के अनेक हिसाब-किताब हैं, अपने कर्मों को नहीं कूटो लेकिन एक तरफ रखो कर्म, एक तरफ बाबा फिर वर्णन करो भारी कौन? कर्म! कर्म बड़े या कर्म के खाते को भस्म करने वाला बड़ा! कर्मों से बचाने वाले ने हमारी जवाबदारी स्वयं के हाथ में ले ली। उसने कहा तू मेरी ऊंगली पकड़ो मैं तुम्हारे सब पाप दग्ध कर दूँगा, यह जिम्मेवारी उसने ली। जब जिम्मेवार ने हमारी जिम्मेवारी ली तो हमारा दिल दिमाग, यह अंग सब शीतल हो गये। भगवान हम बच्चों से वायदा करता - वह अपना वायदा निभा रहा है फिर हम अपनी फुल जवाबदारी उसके हाथ में देकर हल्के क्यों नहीं होते! हल्के बनो तो फरिश्ते बनो।

6) रोज सवेरे एक ही धुन लगाओ - मुझे मेरा बाबा मिल गया। यह शिवबाबा की भांग पी लो, घोट-घोट कर नशा चढ़ा दो, बस इसी मस्ती में रहो तो बाकी दुनिया की सब मस्तियां खत्म हो जाएं। मुझे तो कई बार हंसी भी आती तो तरस भी पड़ता - कहते हैं मैं सच कहती हूँ मुझे इतना निश्चय नहीं बैठता। मुझे वह भगवान, वह ईश्वर मिल गया है, यह अन्दर से नहीं आता, मुझे तरस पड़ता, कहती हूँ बाबा आप कितने न प्यारे हो, लेकिन कितने गुप्त हो। बाबा इनके सामने तू बादल रख क्यों बैठे हो, जो बादलों के बीच आप सूर्य को यह नहीं जान सकते। बाबा को कहती - बाबा इनके सामने से यह बादल हटा दो तो यह देख लें, तू है कौन। तेरी इतनी शक्तियों की किरणें क्यों नहीं यह देखते! क्या इन्हें यह दिव्य बुद्धि नहीं मिली है। वास्तव में यह है सूक्ष्म में अपने देह-अभिमान का नशा, इसलिए सूर्य की शक्ति को पहचान नहीं सकते।

7) कई बार मन में जो यह संकल्प चलता कि जीवन का सौदा है, मालूम नहीं जीवन चल पायेगी या नहीं, मालूम नहीं मेरा भविष्य उज्जवल रहेगा। सोच समझकर कदम लेना चाहिए। पता नहीं जीवन का कैसा मोड़ आये... वह शादी तो क्या करनी, शादी तो बरबादी है, बाबा का बनकर रहें तो ठीक है। परन्तु पता नहीं मेरे संस्कार किस तरह के हों, दूसरे के किस तरह के हो, सर्विस में कदम रखें सफलता न मिले तो... ऐसा न हो इस दुनिया से भी जावें उस दुनिया से भी जावें! दादियाँ तो कहेंगी तुम्हें ब्रह्माकुमारी बनना है। वह तो ठीक है। ब्रह्माकुमारी तो ठीक परन्तु अपने पांव पर तो खड़ा रहना चाहिए, कोई का बोझ नहीं बनना चाहिए, मैं सेन्टर पर रहूँ, कभी कुछ चाहिए फिर मांगू..... यह तो मेरे से नहीं होगा। किसी के दान से मैं खुद की जीवन कैसे पालूँगी। दूसरे के दान से मैं रोटी खाऊं यह तो मेरे से नहीं हो सकता! मैं कमाऊंगी तो धन तो लग जायेगा... पता नहीं सेन्टर पर रहूँ, फिर आपस में न बनें, बैठकर मन खराब करूँ, इससे तो दूरबाज खुशबाज रहना ही ठीक है, कम से कम परतन्त्र तो नहीं रहूँगी, स्वतन्त्र रहना ठीक है। बाबा को ही तो याद करना है। बाबा की मुरली ही तो सुननी है, बाकी यह सर्विस में रहना, झंझटों में आना, इससे तो अपने को न्यारा रखना ही ठीक है। बाबा कहते न्यारे रहेंगे तो प्यारे बनेंगे, इससे ही आपे ही प्यारी बन जाऊंगी। अपनी शान में रहना चाहिए। आज की दुनिया में तो पैसे के सिवाए कुछ भी नहीं है, लोग भी पैसे की इज्जत करते, मैं ब्रह्माकुमारी तो बनी लेकिन पैसा होगा तो इज्जत तो मिलेगी। इसलिए कमाना ठीक है। बहुत हैं जो ऐसी भाषा बोलती हैं। मैं भी कहती हूँ –बिल्कुल ठीक है, सही बात है... लेकिन प्रवृत्ति वालों के लिए तो बाबा ने कहा है तुम दोनों को निभाओ। कुमारियों को किस मुरली में कहा, वह मुरली तो मैंने कभी सुनी नहीं है।

8) बाबा हमें कहते बच्चे गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ इज दी बेस्ट.. इस लाइफ के चार सब्जेक्ट हैं। तो अपने आप से पूछो - मेरी चारों ही सब्जेक्ट ठीक हैं! मेरी बुद्धि ज्ञान में रमण करती है? मेरे में नॉलेज की इतनी शक्ति है जो कोई कैसा भी प्रश्न करे मैं उसका उत्तर ठीक दे सकूँ, मैं किसी बात में स्वयं उलझी हुई तो नहीं हूँ? मुझे हर प्वाइंट को स्पष्ट करने की युक्ति आती है? फिर दूसरी सब्जेक्ट जो निरन्तर योगी की है, उस योग का आनन्द अनुभव किया है? बाबा की याद में उड़ने का, दिल, जिगर का अभ्यास है? दुनिया भूलने का अभ्यास है? अगर योग का अभ्यास हो तो अनेक प्रकार के प्रश्नों का जवाब मिल जायेगा। यह सब्जेक्ट जितनी जो पॉवरफुल बना सके, बनाओ। योग की मस्ती चढ़ी रहे तो कमाई ही कमाई है। जिसको मुरली से प्रीत नहीं, योग से लगन नहीं वह कोई सेवा भी लगन से नहीं कर सकते। कोई-कोई कहते हैं मैं रोज़ मुरली नहीं सुनती हूँ, नींद आ जाती है, नौकरी पर जाना होता है... मैं कहती यह मेरे बाबा की इनसल्ट है। बाबा सागर मुझे रत्न देने आता है और मैं कहती मैं रोज क्लास नहीं करती! बाकी तू जिंदा ही किसलिए हो। जो बाबा की मुरली का कदर नहीं करते वह ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं। क्लास न करना यह श्रीमत की पहली अवज्ञा है। 15 मिनट भोजन खाते और बाबा की मुरली नहीं सुनते - मैं उन्हें ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं समझती।

9) हमारी तीसरी सब्जेक्ट है - दैवीगुण। कोई कहते हैं मेरे में यह कड़ा संस्कार है... मुझे यह शब्द सुनते ही शॉक लगता... यह भी कोई जवाब है! मेरे स्वभाव में मेरा मूड आफ का स्वभाव है, ईर्ष्या का संस्कार है, देह-अभिमान है, थोड़ा जोश है, थोड़ा मोह है, पता नहीं क्या-क्या बोलते, मैं पूछती हूँ क्या यही प्रसाद मैं भगवान को चढ़ाती हूँ। इन स्वभावों की भेंट चढ़ाई खत्म हुए, बार-बार यही भेंटा चढ़ाते.. क्या इनको अपने पास रखने से सुख-शान्ति मिलेगी? तो देखना है हमारी तीसरी सब्जेक्ट दैवी संस्कारों वाली बनी है? इतना परिवर्तन आया है जो मैं उसमें भी अपनी सम्पन्न मार्क्स लूँ।

10) चौथी सब्जेक्ट है सेवा - तो हमें खुद के लिए जीना है या विश्व कल्याण के लिए जीना है? कई सोशल-वर्कर होते जो कितनी लगन से सेवा करते, अपना तन-मन-धन सब सेवा में लगा देते - जब वह इतना सेवा में दे सकते तो क्या हम अपना श्वाँस-श्वाँस सेवा में सफल नहीं कर सकते! क्या खुद के लिए श्वाँस है या बाबा की सेवा के लिए, विश्व कल्याण के लिए है? यह संकल्प, यह श्वाँस, यह समय, यह सम्पत्ति, यह जीना मेरा मेरे बाबा की सेवा के लिए है। जो इस सेवा में अपने आपका त्याग करता वही महान बनता। बाबा की सेवा में ही हमारी मौज है। मेरा भोजन है बाबा की सेवा, मेरा सेकण्ड-सेकण्ड संकल्प श्वाँस है सेवा। हमारा स्लोगन है त्याग, तपस्या और सेवा। त्याग से हमारा भाग्य बनता, तपस्या हमें कर्मातीत बनायेगी और सेवा से भविष्य ऊंच पद मिलेगा। तो हे वरदानी आत्मायें, अब खूब अच्छी तरह से सोचो, मंथन करो और मधुबन वरदान भूमि में परिवर्तन होकर जाओ। ऐसा परिवर्तन हो जो लगे नई होली मनाकर आये हैं। अच्छा।